ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-11* December- 2020
Innovation The Research Concept

पातालकोट के भारिया

Bharia of Patalkot

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

प्रियंका साहू
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
गवर्नमेंट मॉडल कॉलेज
शहपुरा, डिंडौरी,मध्यप्रदेश, भारत

सारांश

भारिया जनजाति का विस्तार क्षेत्र मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा, सिवनी, मण्डला और सरगुजा जिले हैं। इस अपेक्षाकृत बड़े भाग में फैली जनजाति का एक छोटा सा समूह छिंदवाड़ा जिले के पातालकोट नामक स्थान में सदियों से रह रहा हैं। पातालकोट दक्षिण मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा शहर से लगभग ७५ किलोमीटर दूरी पर स्थित यह विशालकाय घाटी का धरातल लगभग ३००० फीट गहराई में स्थित है। पातालकोट स्थल को देखकर ही समझा जा सकता है कि यह वह स्थान है जहां समय रूका हुआ सा प्रतीत होता है। इस क्षेत्र के निवासी शेष दुनिया से अलग–थलग एक ऐसा जीवन जी रहे हैं जिसमें उनकी अपनी मान्यताएं हैं,संस्कृति और अर्थव्यवस्था है। जिसमें बाहर के लोग कभी–कभार पहुंचते हैं। इस विहंगम घाटी में गोंड और भारिया जनजाति रहती है। इन आदिवासियों के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य सुविधाएँ भी उपलब्ध नहीं हैं, किंतु ये आदिवासी आमजनों से ज्यादा तंदुरुस्त हैं। ये आदिवासी घने जंगलों,ऊँची–नीची घाटियों पर ऐसे चलते हैं, मानो किसी सड़क पर पैदल चला जा रहा हो। आधुनिकीकरण से कोसों दूर पातालकोट घाटी के आदिवासी आज भी अपने जीवन यापन की परम्परागत शैली अपनाए हुए हैं। रोजमर्रा के खान–पान से लेकर विभिन्न रोगों के निदान के लिए ये आदिवासी वन संपदा पर ही निर्भर करते हैं। पातालकोट का शाब्दिक अर्थ है पाताल को घेरने वाला पर्वत या किला। यह नाम बाहरी दुनिया के लोगों ने छिंदवाड़ा के एक ऐसे स्थान को दिया है जिसके चारों ओर तीव्र ढाल वाली पहाड़ियां हैं। इन वृत्ताकार पहाड़ियों ने मानों सचमुच ही एक दुर्ग का रूप रख लिया है। इस अगम्य स्थल में विरले लोग ही जाते हैं। ऐसा नहीं है कि इस क्षेत्र में एक ही जनजाति रहती है। वरन सच तो यह है कि पातालकोट 90 प्रतिशत आबादी भारिया जनजाति की है,शेष 10 प्रतिशत में दूसरे आदिवासी हैं। इस स्थल की दुर्गमता ने ही यहां आदिवासी जीवन और संस्कृति को यथावत रखने में सहायता दी है।

The extension area of Bharia tribe is Chhindwara, Seoni, Mandla and Surguja districts of Madhya Pradesh. A small group of the tribe spread over this relatively large part has been living for centuries in a place called Patalkot in Chhindwara district. Patalkot: Situated at a distance of about 75 kilometers from the city of Chhindwara in South Madhya Pradesh, this giant valley floor is located at a depth of about 3000 feet. It can be understood by looking at the site of Patalakot that this is the place where time seems like a halt. The residents of this region, isolated from the rest of the world, are living a life in which they have their own beliefs, culture and economy. In which outsiders occasionally reach. The Gond and Bharia tribes live in this Vihangam valley. Primary health facilities are also not available for these tribals, but they are more healthy than tribal people. These tribals walk on thick forests, high valleys, as if walking on a road. Far from modernization, the tribals of Patalkot Valley are still adopting their traditional way of living. They depend on tribal forest wealth for the diagnosis of various diseases ranging from everyday eating and drinking. Patalakot literally means mountain or fort enclosing Patal. People of the outside world have given this name to a place in Chhindwara which is surrounded by steep hills. These circular hills have literally taken the form of a fort. Only rare people go to this inaccessible place. It is not that only one tribe lives in this area. But the truth is that 90 percent of the population of Patalkot belongs to the Bharatiya tribe, the remaining 10 percent are other tribals. The inaccessibility of this site has helped in keeping the tribal life and culture intact here.

मुख्य शब्द : मेघनाथ स्तंभ, भीमसेन, मृतक चौतरा, कृशकाय (दुबला–पतला), ढ़ाना, कौतूहल, रखोड़ी, खंदाड़, भर्रुघास, ढाहिया, कोलेरियन, बसाहट, उसारी, पेज, ढ़ाना , किंवदंतियां, पितृसत्तात्मक

Meghnath Pillar, Bhimsen, Deceased Chaitra, Krishakaya (lean-skinny), Dhana, Kautuhl, Rakhadi, Khandar, Bharughhas, Dahiya, Cholerian, Bashat, Usari, Page, Dhana, Legends, Patriarchal

प्रस्तावना

पातालकोट में निवास करने वाली जनजाति भारिया के विषय में कुछ जानने के पूर्व उसके विशिष्ट क्षेत्र पातालकोट की विशेषताओं को जानना अत्यंत आवश्यक है । 79 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पातालकोट की धरती की प्राकृतिक सुषमा को समीप से निहारना अपने आप में कौतूहल का विषय है । यह एक ऐसा अनुभव है जो तन तथा मन दोनों को रोमांचित कर देद्य सतपुड़ा घाटी के मध्य क्षेत्र से ऊंची होते हुए उत्तर की ओर नर्मदा घाटी की ओर झुकाव एवं पूर्व से पश्चिम की तरफ उच्च शिखाओ वाला यह पठार ,घाटी और तंग दर्रों कि विशाल श्रृंखला है। इस पर्वतीय घाटी का "कटोरीनुमा" आकृति का स्थल ही "पातालकोट" के नाम से जाना जाता है। पातालकोट तीन ओर से स्थाई कनातों से घिरा है। यह समुद्र तल से 2750 से 3250 फीट की ऊंचाई पर स्थित है ।पातालकोट छिंदवाड़ा से 75किलोमीटर दूरी पर स्थित है।१ प्रकृति के दो उपादानो से यथा शिखरोऔर वादियों से आवृत पातालकोट का अंतरू क्षेत्र अद्वितीय है। ऊंचे से ऊंचा पर्वत तथा निम्न से निम्नतम घाटिया इसकी विशेषताएं हैं ।ऊंचे पर्वतों से यह घिरा यह क्षेत्र आवागमन के साधनों से रहित हैं। पातालकोट के किसी भी ग्राम तक पहुंचने की हेतु 1200से 1500 फीट तक उतरना चढ़ना पड़ता है। केवल 2 ग्राम घटलिंगा तथा गुड़ी छतरी तक ही वाहन से पहुंचा जा सकता है ।शेष ग्राम तक पैदल चलकर ही जाया जा सकता है। पातालकोट, दूधी और गायनी नदियों के उद्गम स्थलो पर धूप अलसाती हुई आती प्रतीत होती है। सूर्य की किरने यहां दोपहर तक ही पहुंच पाती है तथा शाम को जल्दी चली जाती है।२ पातालकोट के दृश्य किसी चित्र की भांति प्रतीत होते हैं। मिट्टी के कई रंग ,वृक्षों के कई ढंग, झरनों तथा नदियों के निर्बाध उमंग तथा भारियाओ की आदिम निश्छलता तथा विविध विपत्तियों के पश्चात भी आदिवासियों में जीवन के प्रति अदम्य जिजीविषा हैं।3

अध्ययन के उद्देश्य

पातालकोट जैसे विलक्षण क्षेत्र के विषय में व्याख्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना तथा वहां निवास करने वाले भारिया के जीवन ,आचार विचार, उत्पत्ति संबंधी अवधारणा सामाजिक आर्थिक रीति–रिवाजों के विषय में विविध तथ्य समाज के सम्मुख प्रस्तुत करना है इस लेख का प्रमुख उद्देश्य है।

पातालकोट के निर्माण के विषय में पौराणिक कथा विद्यमान है। जिसके अनुसार भगवान शंकर तथा माता पार्वती के विवाह के पश्चात पार्वती जी ने अपने शरीर के मैल से मूर्ति बनाकर उसे भस्म या रखोड़ी के पास रख दिया। भगवान शंकर ने उसमें प्राण डाल दिए। भस्म से उत्पन्न होने के कारण उसका नाम भस्मासुर पड़ा और उसने तपस्या कर भगवान शंकर को प्रसन्न कर भस्म कंगन प्राप्त कर लिया। कालांतर में वह अभिमान के कारण भगवान शंकर को ही भस्म करने चल पड़ा और भगवान शंकर यत्र तत्र छिपते रहे तथा उन्होंने भागते भागते बड़ा खंदाड़ बना दिया। वही पातालकोट है और उसके पीछे पीछे भस्मासुर यही कूदता रहा जिससे बड़ी–बड़ी खाईयां निर्मित हो गई।४

मूल निवास स्थान

भारिया जनजाति का अस्तित्व मुख्यता छिंदवाड़ा तथा जबलपुर जिले में है ।सर्वाधिक भारियाजन जबलपुर में निवास करते हैं। छिंदवाड़ा के तामिया विकासखंड में पातालकोट के निवास करने वाले भारिया सदैव आकर्षण का केंद्र रहे हैं ।भारिया एकांत में निवास करना अधिक पसंद करते हैं। भारिया जहां निवास करते हैं। इस स्थान को ढाना कहते हैं ।एक ढ़ाना में 2 से लेकर 25 घर होते हैं दो ढ़ानो के मध्य 3 से 5 किलोमीटर तक का हो सकता है। दो–चार ढ़ाना मिलकर गांव का निर्माण करते है। पातालकोट में गांवों तक पहुंच मार्ग बलखाती नागिन के समान प्रतीत होते हैं। भारियाओं को सिर पर भार रख नित्य चलने का अभ्यास है। पातालकोट में भारियाओ के निवास करने का मुख्य कारण ढाहिया खेती है, क्योंकि पातालकोट में विशाल भूमि, घने जंगल ,निरापद स्थल होने के कारण इस कृषि हेतु जंगल काटकर खेती करने में भारियाओ को कोई समस्या नहीं थी। इस हेतु वे इस स्थान पर मैदानों में आकर बस गए।५ डॉक्टर रशेल तथा हीरालाल ने भारियाओ का मूल स्थान महोबा तथा बांधवगढ़ माना है। भारिया ढ़ाहल क्षेत्र के राजा करण देव को अपने आव्रजन का कारण मानते हैं। महोबा और बांधवगढ़ भार क्षेत्र के अंतर्गत आता है राजा कर्ण देव बार जाति के ही थे। पातालकोट में भारियो की उपस्थिति आदिम रूप से नहीं है क्योंकि वर्तमान में जहां छिंदवाड़ा जबलपुर तामिया जैसे क्षेत्रों में इनकी संख्या दो लाख है ।वही पातालकोट में मात्रा दो हजार की संख्या में है ।पातालकोट में भारियाओ का आना मुख्यता ढाहिया खेती ही है।६

स्वरूप

भारिया जनजाति के स्वरूप के विषय में अलग–अलग विद्वानों का अलग–अलग मत हैं। यथा हीरालाल तथा रशेल ने अपनी पुस्तक "टाइब्स एंड कास्ट्स ऑफ सेंट्रल प्रोविंस" में बताया है कि भारिया या भूमिका ग्राम देवता की पूजा करने वाले पुजारी थे। भूमिया एक सम्मान सूचक शब्द है ।ड्रायस के अनुसार भारिया वन्य गोंड थे तथा दाहिया कृषि करते
थे। भारिया सर्वथा पृथक जनजाति होने के पश्चात भी इनका संबंध कोलेरियन मुंडा परिवार से रहा है।७

शारीरिक संगठन

भारिया समानत: मध्यम कद, छरहरा बदन तथा श्याम वर्ण वाले होते हैं। आंखें छोटी , नाक कुछ चौड़ी पर, सुडोल होती है । ओंठ पतले तथा दांत बारीक होते

हैं । स्त्रियां अपेक्षाकृत कृशकाय (दुबला– पतला) होती हैं। लेकिन नाक, नक्श सुडोल तथा सुंदर होते हैं। दंतपंक्तियां, स्त्रियों की सर्वथा महीन होती है। कमर पतली तथा उरोज उठे हुए नहीं होते हैं । समान्यत: देखने पर भारिया गोंडों तथा कोरुकू के समान लगते हैं परंतु उनके बात करने के लहजे तथा नाक नक्श के अंदाज से भारिया स्त्री पुरुष अपना अलग –अलग अस्तित्व रखते हैं। भारिया अल्प भाषी ,सच्चे , ईमानदार मेहनती परंतु भीरू प्रवृत्ति के होते हैं।८

मध्य प्रदेश सरकार ने पातालकोट में निवास करने वाली भारिया जनजाति को "विशेष पिछड़ी जनजाति" घोषित किया है। तथा इनके विकास हेतु षविशेष आदिमजाति प्राधिकरणष का गठन किया है। इस प्राधिकरण का मुख्य कार्य इन जातियों को विकास के पायदान पर आगे बढ़ाना है।६

उत्पत्ति संबंधी अवधारणाएं

भारिया जनजाति की उत्पत्ति की अनेक किंवदंतियां प्रचलित है। इनमें से एक इस प्रकार है कहा जाता है कि महाभारत युद्ध के समय अर्जुन ने "भरुं" नामक घास को अभिमंत्रित कर असंख्य भारियाओ को उत्पन्न किया। इन्होंने महाभारत युद्ध में अपना योगदान दिया तथा वे ही भारियाओं के पूर्वज के कह लाएं।१० गोंड तथा भारियाओं का परस्पर अंतर्संबंध रहा है। गोंड भारियाओं को अपना छोटा भाई मानते हैं। इस विषय में एक दंत कथा प्रचलित है कि गोंड़ ने एक बार रंजुक माई का पूजन रखा व भैसें की बलि दी। तभी वहां कुछ आगंतुक आ गए। वे बलि को ना देख पाए इस हेतु उसने उसे सफेद कपड़े से ढक दिया। परंतु मेहमानों के जिद्द करने के कारण गोंड़ ने जैसे ही सफेद वस्त्र हटाया उसमें से 16 वर्ष का युवा उनके सम्मुख खड़ा हुआ और कहा कि मैं गोंड़ों का छोटा भाई भारिया हूं ।तभी से ही "फरिया (कपड़े)का भारिया" कहावत चल पड़ी।११ अन्य कथा यह भी प्रचलित है कि श्री रामचंद्र जी जब 14 वर्ष के लिए वनवास गए। गोंड ,भारिया भी जंगल में उनकी सेवा हेतु चले गए परंतु जब भी राम वन से रावण का वध करके लौटे तब ये वापस नहीं आए, वही वन में रहने लगे तथा वनवासी कहलाए।१२

आवास तथा भोजन

भारिया अपने मकानों का निर्माण स्वयं करते हैं। इनकी विशिष्ट बसाहट ढ़ाना कहलाती है। इनके घर के पीछे बाड़ी होना आवश्यक होता है। भारियाओ के मकान लकड़ी घास –फूस तथा टट्टो से बने होते हैं। खपरैल तथा घरों की दीवार भारिया स्वयं बनाते हैं। घरों का व्यवस्थित स्वरूप निर्मित किया जाता है। घर में एक वृहद कक्ष तथा साथ में भोजन कक्ष होता है। मुख्य दरवाजे की तरफ एक ढ़ाली उसारी होती है। मवेशियों को बांधने के लिए सार होते हैं ,जो घर के सामने होते हैं। घर के आंगन में वस्तुएं सुखाने हेतु जैसे आम के बीज ,महुआ के लिए "मढ़ा" लकड़ियों से निर्मित होता है। भारिया परिवार सयुंक्त एवं एकल दोनों प्रकार के होते हैं। भारिया के निवास क्षेत्र में मेघनाथ स्तंभ, भीमसेन, मृतक चौतरा अवश्य होता है।१३

भारिया मुख्यता भोजन में कोदो, कुटकी ,धान ,सावा मक्का ,ज्वार ,भात खाते हैं। उनका मुख्य भोजन पेज है । यह पेज मक्का ज्वार और कुटकी पिसी से बनाया जाता है। भारिया जनजाति के लोग मक्का, ज्वार तथा पिसी की रोटी विशेष अवसरों पर बनाते हैं। बरसात के दिनों में अनाज के कमी होने पर महुआ तथा आम के बीजों की रोटी खाते है। महुआ का घोट, बलहार की दाल,ठेठरा बनाया जाता है। ठेठरा, चीला व खीर इन के मीठे पकवान है। भारिया आषाढ़ मास में तथा भादो मास में धबई की भाजी, भाड़का, मोसिया, छितावर, राजगिरी की भाजी खाते हैं। भारिया मांसाहार का सेवन भी करते हैं। यह बकरी, सूअर, पड़ा, सांभर का मांस भक्षण करते हैं तथा पक्षियों का शिकार करते हैं। मछलियां भारिया बेहद शौक से खाते हैं। यह कुत्ते, बिल्ली, गौरैया, चूहे का मांस नहीं खाते। परंतु यह सांप तथा मोर अवश्य खाते हैं।१४ भारिया जनजाति महुआ से शराब बनाते हैं तथा हर धार्मिक मांगलिक तथा सामाजिक कार्यक्रमों में इसका सेवन होता है।१५

वस्त्र आभूषण

भारिया साधारण वेशभूषा धारण करते हैं भारिया पुरुष धोती कुर्ता बंडी तथा पगड़ी बांधते हैं। स्त्रियां लाल रंग की सेंदरी साड़ी धारण करती है। कमर के ऊपर पोलका पहनती है। शिशु प्रायरू नग्न रहते हैं या सिर्फ लंगोट धारण करते हैं। ये अधिकांशत नंगे पैर ही रहते हैं।१६ आभूषणों में स्त्रियां कान में कर्ण फूल तथा बारी, गले में पोत व सरियाचंदन हार (साकल), हमेंल (चांदी के सिक्कों का हार) नाक में लौंग, भुजा पर बाकड़, बहोटा,कलाई में कंगन धारण करती हैं। गुलेटा, कमर में कमर दोना ,पैरों में पायल तथा तोड़ा, पैरों की उंगलियों में मुँदी, अंगूठे में चुटका धारण करती हैं ।१७ वहीं पुरुष भी श्रृंगार करता हैं। वे कान में चांदी की मुरकी, कमर में कमरदोना, हाथ में चूड़ा उंगलियों में छल्ला पहनते हैं। भारिया जनजाति परस्पर प्रेम भाव से जीवन व्यतीत करते हैं। शिकार भारिया जनजातियों का प्रिय शौक हैं। विविध प्रकार के पशु पक्षियों तथा मछलियों का शिकार करते हैं।१८

सामाजिक संगठन

भारिया सामाजिक संगठन में ग्राम का मुखिया पटेल कहलाता है। यह जाति पंचायत का भी मुखिया होता है। तथा यह पद परंपरागत रूप से भरा जाता है। पटेल ग्राम में सामाजिक संगठन को मजबूत बनाने का कार्य करता है। पंचायत पांच व्यक्तियों से निर्मित होती है। जिसमें पटेल के पश्चात भूमिका, पडियार, कोटवार तथा कोई अनुभवी व्यक्ति मिलकर निर्णयन का कार्य करते हैं। ग्राम के विषय में विविध जानकारी सरकार या प्रशासन को कोटवार के द्वारा प्रदान की जाती है। यह प्रशासन के द्वारा नियुक्त किया जाता है। पंचायत का निर्णय सर्वोपरि होता है तथा सभी आदिवासियों को उसे ससम्मान मानना होता है ।१९भारिया समाज पितृसत्तात्मक परिवार है। भारिया समाज में एकल परिवारों की प्रधानता होती है। परिवार निर्माण का मुख्य उद्देश्य प्रजनक, उत्पादक तथा संरक्षण है। पारिवारिक दायित्वों का वहन करना भारिया परिवार के सभी सदस्यों का कर्तव्य होता हैं। ये अपनी

संतानों को उत्पादन तथा संरक्षण का कार्य सिखाते हैं। भारिया जनजातियों में 51 गोत्रों का उल्लेख है परंतु वर्तमान में 19 गोत्र ही चलन में है। (1) भदरिया (2) खमारिया (3) पंचालिय (4) बघोठिया (5) अंगरिया (6) विजालिया (7) डंडोलिया (8)चलीविया (9) रोनिया (10) कंहोलिया (11) ठाकिया (12) नहालिया (13)महाविया (14)ग्वालिया (15)कुडमियाँ (16)बगदरिया (17) कुंडालिया (18)अमोरिया (19) बिलाई –कोलियों, भरिया जनजाति में गोत्र अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं । ये गोत्र पवित्र माने जाते हैं।

सगोत्र विवाह इन में वर्जित है ।भारियाओ में बहुपत्नी विवाह का प्रचलन है। पातालकोट में विवाह के विविध रूप यथा सेवा विवाह ,सहमति विवाह तथा अपरहण विवाह का भी प्रचलन है।२०

आर्थिक गतिविधियां

भारिया जनजातियों के आर्थिक गतिविधियां इतनी उन्नत नहीं है, वे प्रारंभ से ही ढ़ाहिया खेती करते आ रहे थे परंतु ढ़ाहिया खेती समाप्त होने के पश्चात उनके द्वारा मजदूरी कर अपना भरण–पोषण करना आरंभ कर दिया गया। परंतु पातालकोट विकास प्राधिकरण के खेती के समुचित विकास कार्यों के द्वारा भारियाओ ने कृषि कार्य में रुचि लेने प्रारंभ कर दिया परंतु भूमि की उर्वरता कम होने के कारण उत्पादन अधिक नहीं है। कोदो, कुटकी, जैसा मोटा अनाज ही उपजाते हैं। आय का यह बड़ा स्त्रोत नहीं हो पाता था। लघु वनोपज तथा जड़ी बूटियों का संग्रहण भारियाओ का द्वितीय महत्वपूर्ण आर्थिक स्त्रोत है। भारिया पातालकोट में उत्पन्न होने वाले आम, जामुन, आचार, हर्रा, महुआ, तेंदूपत्ता का संग्रहण कर भारिया उसे साप्ताहिक हाटो में विक्रय करने जाते हैं। यह कुछ परंपरागत शिल्पो के माध्यम से भी आय प्राप्त करते हैं, यथा बांस से बनी सामग्रियों जैसे टोंकनिया, सूपे, डलिया बनाकर विक्रय करते हैं। छिंद पत्तियों, देवबहरी घास से झाड़ू बनाना, लकड़ी के दरवाजों पर खुदाई कार्य करना इनका परंपरागत शिल्प है। देवबहरी घास की झाड़ू छिंदवाड़ा तथा पचमढ़ी में अधिक विक्रय होती है। इसके साथ ही साथ में पेड़ों की छाल से बनी रस्सियाँ भी बेचते हैं। "बुलेटिन ऑफ द ट्राईबल रिसर्च एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट भोपाल" के बुलेटिन से ज्ञात होता है, कि पातालकोट में निवास करने वाले भारियाओ को अपनी आवश्यक वस्तुओं की खरीददारी हेतु लोटिया, छिंदी, तामिया, ढेलाखारी की हाट से क्रय करना पड़ता है। क्योंकि पातालकोट में कोई हाट नहीं है। यह हाट बाजार ही इनके सामाजिक संपर्क का मुख्य स्त्रोत है।२१

धार्मिक गतिविधियां

भारिया जनजाति के लोग भी युगो से अनेक जातियों के समान बहुदेववाद में विश्वास करते हैं ।भारिया अपने स्थानीय देवी–देवताओं की आज्ञा, उनके दिशानिर्देशों को मानते हैं। भूत, पिचास, शैतान जैसे शक्तियों पर भारिया का सहज विश्वास होता है। २२ बड़ा देव या बूढ़ादेव भारिया के ग्राम देवता है। कहीं–कहीं बूढ़ादेव का चबूतरा या मड़ीया बना दी जाती है। यह ग्राम की रक्षा करने वाले देवता है। जिस ढाना में बड़े देव का चबूतरा नहीं होता वहां साजा वृक्ष की पूजा की जाती है। मुठवा बाबा का चतबूरा ग्राम की सीमा पर होता है। यह ग्राम के संकट को दूर करते हैं। वर्ष में एक बार इनकी पूजा होती है। प्रत्येक गांव में मेघनाथ स्तंभ होता है, इसकी पूजा फागुन मास में एक बार होती है ।मेघनाथ पूजन के पश्चात होली खेली जाती है। 23 हरदौल पूजा का आयोजन भारिया हर वर्ष करते हैं यह पूजा हरदौल लाला के नाम से की जाती है। वहीं भीमसेन देव को विवाह का वरदान देने वाला देवता माना जाता है। जिनकी पूजा चौत, बैसाख तथा जेठ माह में की जाती है । भीमसेन देवता की पूजा सामूहिक रूप से की जाती है । इसके पश्चात सेतम तथा भड़म नृत्य किया जाता है । इसके अलावा स्थानीय देवियों पर भरियाओ का विश्वास होता है। यथा जगतार माई, भवानी माई, खेरापति माई, बंजारी माता, काली मा , दुर्गा माई, खेरमाई बाहरी बाधाओं को रोकती है।२४ तंत्र मंत्र जादू टोने पर भरियाओ का अधिकांश विश्वास होता है। वहीं तंत्र मंत्र जादू टोने के आस्था तंत्र के अगुवा के रूप में भूमिका तथा गुनिया पर वे सर्वाधिक विश्वास करते हैं। भूमका, तंत्र मंत्र जानता है । गुनिया जड़ी बूटी के ज्ञान में पारंगत होता है यह नाड़ी देख कर बीमारी का निदान भी करता है। भारिया जनजाति के लोग अपने वातावरण में ही समस्त समस्याओं का निदान ढूंढ लेते हैं। पातालकोट में जड़ी बूटियों का दुर्लभ संग्रह ने जिस के विषय की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास "नेशनल बॉटनिकल इंस्टिट्यूट लखनऊ" के द्वारा किया जा रहा है।२५

पर्व त्यौहार

अवसादो को विस्मृत करने का स्थान पर्व का आयोजन स्थल है। भारियाओं के समस्त त्योहार प्रकृति से जुड़े हैं विदरी ,धरती बादल और बीज की पूजा का त्यौहार है अनाज की बुवाई के पूर्व जेठ माह में सामूहिक पूजन का आयोजन किया जाता है। जिसमें भीमसेन, बड़ा देव , मुठवा देव तथा कई देवियों की पूजा की जाती है।२६ नवाखानी त्योहार प्रत्येक भारिया परिवार का व्यक्तिगत त्यौहार होता है। यह प्राथमिक फसल पूजा का त्योहार है यह पूर्वजों की पूजा का त्यौहार है। नए अन्न फल सब्जियों का भोग अपने पूर्वजों तथा देवी–देवताओं को लगाया जाता है । नवाखानी पर्व नवीन अनाजों तथा भोज्य पदार्थों का त्यौहार है। जवारा नवरात्रि में मनाए जाने वाला त्यौहार है 9 दिन जवारा गेहूं की पूजा की जाती है । कार्तिक अमावस्या को दीवाली का त्योहार मनाया जाता है। मिट्टी या आटे के दीप प्रज्वलित किया जाते हैं । गोबर से आंगन में गोवर्धन का निर्माण कर पूजन किया जाता है। इस दिन पशुओं को खिचड़ी खिलाई जाती हैं।९ गाय खेलना या खिरका खेलनाष्का आयोजन किया जाता है। होली के त्यौहार पर मेघनाथ की पूजा की जाती है रंग गुलाल खेला जाता है महिला तथा पुरुष फाग गाते हैं।२७

जन्म एवं विवाह संस्कार

प्रकृति ने आदिवासी महिलाओं को शारीरिक श्रम करते करते इतना अदम्य साहस तथा सहनशीलता प्रदान

कर दी है ।जिससे वे सामान्यता प्रसव काल तक में खेतों में काम करने जाती हैं तथा खेतों में ही शिशु को जन्म दे देते हैं ।तृतीय दिवस शुद्धिकरण संबंधी रीति रिवाज संपन्न कर दिए जाते हैं। शिशु नामकरण से 6 माह बाद संपन्न कराया जाता है। अन्नप्राशन भी इसी समय किया जाता है । प्रसव पश्चात छठवें दिन में छठी का आयोजन किया जाता है।जिसमें छठी माता जो बच्चे का भाग्य लिखती है का पूजन किया जाता है। शिशु का नामकरण का कार्य बच्चे की बुआ अथवा कोई सयानी स्त्री पूर्वजों, दिनों या महीनों के नाम पर करती है।२८ स्वयं की सामाजिक प्रथाओं तथा रीति–रिवाजों के प्रति सजगता तथा कट्टरता भारियाओ की विशेषता है। प्रथाओं के परिपालन में यह भारिया परंपरागत होते हैं। भरियाओ में विवाह पद्धति चार प्रकार की होती है। भारिया जनजाति में सगोत्र विवाह नहीं होते। अपने मामा तथा बुआ के लड़के लड़कियों में विवाह सर्वोत्तम माना जाता है। २९ भारियां में विवाह की चार पद्धतियां है –

मंगनी विवाह

इस प्रकार के विवाह में वर पक्ष से उसके पिता तथा ग्राम के दो बुजुर्ग व्यक्ति विवाह प्रस्ताव लेकर वधू पक्ष के यहां जाते हैं। वहां आंगन में जाकर बैठा कर पानी मांगते यदि पानी मिल जाता है ।तो इसका तात्पर्य वधू पक्ष विवाह हेतु राजी है ।यदि नहीं तो अतिथियों को गर्मी के मौसम में भी पानी नहीं देते।३०

लमसेना विवाह

वर, वधु के घर में निवास कर अपने कार्यों तथा श्रम द्वारा, सास–ससुर की सेवा कर, वधू का हाथ मांगता है। वह विवाह पूर्व ही अपने ससुराल में निवास करता है। विवाह पश्चात्य संयुक्त रूप में भी रह सकता है या अलग भी राह सकता है।३१

राजी–बाजी विवाह

यह प्रेम विवाह का ही एक रूप है इसमें युवक युवतियां प्रेम में पड़ जाते हैं तथा वे विवाह करना चाहते हैं तो युवतियां युवक के घर में जबरदस्ती प्रवेश कर उस पर हल्दी छिटक देती हैं। तो पंच माता–पिता की अनुमति के बिना भी उन्हें विवाह की अनुमति दे देता है।३२

विधवा विवाह

भारिया जनजाति में विधवा विवाह का प्रचलन है। विधवा स्त्री देवर के नाम की चूड़ियां पहन लेते हैंपरंतु यह अनिवार्य नहीं है व अन्य पुरुष के साथ भी विवाह कर सकती हैं। यदि स्त्री घर से भाग कर किसी अन्य पुरुष के घर जाकर बैठ जाती है तो ऐसी स्थिति में द्वितीय पति को पूर्व पति को जुर्माना देना पड़ता है। भारिया जनजाति के लोग महिलाओं के संबंध में उदार दृ ष्टिकोण रखते हैं।३३

मृतक संस्कार

भारियाओ में मृतक के शव को दफनाने की प्रथा है। परंतु कभी–कभी शव का दाह संस्कार भी किया जाता है। कुटुंबियों को समाचार पहुंचाया जाता है, जब तक रिश्तेदार नहीं आ जाते तब तक शव यात्रा नहीं निकाली जाती।दो लकड़ियों की अर्थी बनायी जाती हैं। मृतक के सिरहाने तंबाकू, बीड़ी, चिलम आदि मृतक की प्रिय वस्तुएं रख दी जाती हैं। घर के सभी सदस्य मृतक के मुंह में 5 –10 पैसे रखते हैं। श्मशान पहुंचने के पहले 20 से 25 फीट दूरी पर अर्थी रख कंधा बदल क्रिया तथा मोल लेने की प्रक्रिया होती है। यही मृतक की स्त्री अपनी चूड़ियां श्रृंगार त्याग करती है। मृतक का सूतक तीन दिवस का माना जाता है तीसरे दिन मृतक का तीजा किया जाता है।३४ इस दिन जातक के परिजन उपवास रखते हैं। घर को स्वच्छ किया जाता है। बंधु बांधव आते हैं। वे अपने साथ चावल, दाल आटा, कोदो कुटकी, अंडे, मुर्गी, नारियल लाते हैं। शनिवार के दिन सुबह चौतारा होता है।३५ इस अवसर पर स्त्रियां मृत्यु गीत गाती है। भरियाओ का मृतक स्तंभ कलात्मक ना होकर साधारण मिट्टी का होता है।३६

कला परंपरा

आदिवासियों के घर की दीवार बिना किसी चित्रांकन के प्रतीत नहीं होती। अपितु दीवाल पर उभरे यह रेखांकन बरसों दीवारों के स्थाई अलंकरण हो जाते हैं ।यह अलंकरण आदिवासी महिलाओं की कल्पनाशीलता का अद्भुत उदाहरण है। घर की दीवार पर गेरू मिट्टी के रंगों से फूल पत्ते, गमले, सातिया, पशु , पक्षी के चित्र बनाए जाते हैं। भारिया जनजाति के लोग बांस की सुंदर दैनंदिनी उपयोग की वस्तुएं स्वयं तैयार करते हैं। भारिया की सबसे अधिक कलात्मक अभिव्यक्ति घर का मुख्य दरवाजा मंडा तथा खजूर के पत्तों से निर्मित दूल्हा–दुल्हन के मौढ़ होते हैं। मगरोहन भारियाओं की सर्वश्रेष्ठ कला कही जा सकती है। खम्भ एक सुंदर महल या मंदिर के समान होते हैं।३७

आदिवासी अपने आदिम परंपरा से संगीत को सीखता है। आदिवासी, नृत्य का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं करता अपितु आदिवासीजन स्वफुर्ति से इस प्रशिक्षण को ग्रहण कर लेते हैं। भारियाओ के परंपरागत नृत्य भडम, सैतम ,सैला , करमा, सुआ अहिराई प्रमुख है। भडम को भरनोटी भी कहते हैं। यह विवाह के अवसर पर किया जाने वाला भारियाओं का प्रिय नृत्य है। ३८ विवाह के अवसर पर 50–60 पुरुष नर्तक एवं वादक भाग लेते हैं। सेतम महिलाओं का नृत्य हैं। महिलाओं के आमने सामने दो दल होते हैं। भारिया का यह नृत्य कोरकू आदिवासियों के यापटी से बहुत साम्यता रखता है। कर्मा, सैला नृत्य यह नृत्य अहिराई नृत्य भी कह लाता है। यह नृत्य दिवाली पर किया जाता है इसमें दौहरा गाते हैं और सैला नाचते है।

निष्कर्ष

निष्कर्षत: पातालकोट में निवास करने वाली जनजातियों की संस्कृति अपने आप में विलक्षण है पातालकोट एक ऐसा क्षेत्र है। जो अपने अंदर ही अनेक विशेषताओं को समेटे हुए है। पर्वतीय घाटी का कटोरी नुमा आकृति का यह स्थल अपने आप में ही आश्चर्य तथा रोमांचित कर देने वाली स्फूर्ति उत्तपन्न करने वाला है। यहां निवास करने वाले भारिया जनजाति की संस्कृति भी अविश्वसनीय तथा विविध रोचक तत्वों को अपने अंदर समाहित किए हुए हैं पातालकोट के भरियाओ का

सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन का पक्ष अत्यंत रोचक है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *तिवारी शिव कुमार ,शर्मा श्री कमल ,मध्य प्रदेश की जनजातीय समाज एवं व्यवस्था पृष्ठ क्रमांक 47*
2. *खरे मनोज ,बघेल एल .एस .,"मध्य प्रदेश संदेश" संपादन– सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय प्रकाशन शाखा ,भोपाल, पृष्ठ क्रमांक 112*
3. *अग्रवाल गोपाल कृष्ण, अग्रवाल मीनाक्षी, "समाजशास्त्र" सेट क्रमांक 132*
4. *तिवारी शिवकुमार "मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति" पृष्ठ क्रमांक 76*
5. *गुप्ता एम. एल. शर्मा डी.डी. "समाजशास्त्र" पृष्ठ क्रमांक 400*
6. *स्मिता , "महाकौशल की सामाजिक तथा आर्थिक संरचना" (1920 से 1947 तक) , पृष्ठ क्रमांक 139*
7. *कोष्ठा शैल प्रभा, तिवारी संजय "ग्रामीण विकास में मध्य प्रदेश सरकार की भूमिका 2001 के पश्चात" (जबलपुर जिले के विशेष संदर्भ में) पृष्ठ क्रमांक को 1.2*
8. *गुलाब शेख, गोंड़, मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला, पृष्ठ क्रमांक 92*
9. *श्रीवास्तव प्रदीप मुखर्जी, भवानी एम , "भारत का जनजातीय जीवन" (मानव शास्त्र भाग दो) पृष्ठ क्रमांक 111*
10. *स्मिता , "महाकौशल की सामाजिक तथा आर्थिक संरचना" (1920 से 1947) पृष्ठ क्रमांक 137*
11. *तिवारी शिव कुमार ,शर्मा श्री कमल ,मध्य प्रदेश की जनजातीय समाज एवं व्यवस्था पृष्ठ क्रमांक 121*
12. *अग्रवाल गोपाल कृष्ण, अग्रवाल मीनाक्षी, "समाजशास्त्र" पृष्ठ क्रमांक 132*
13. *तिवारी शिव कुमार, "मध्य प्रदेश के जनजातीय संस्कृति" पृष्ठ क्रमांक 75*
14. *वही*
15. *वही*
16. *श्रीवास्तव ए आर एन, "जनजातीय भारत" पृष्ठ क्रमांक 115*
17. *दक्षिण ध्रुव , "समाजशास्त्र" (यूनिफाइड) ,पृष्ट क्रमांक 123*
18. *Kumar ,social anthropology ,page number 49*
19. *गुप्ता एम एल, शर्मा डी.डी., समाजशास्त्र, पृ. क्र.385*
20. *गुप्त नर्मदा प्रसाद, लोक धर्म और बुंदेलखंड ,पृष्ठ क्रमांक 92*
21. *Russell] Hiralal Rai Bahadur]"tribes and castes of Central province of India "Volume 4]page no 59*
22. *Dubey s -c-] tribal heritage of India page number 192*
23. *तिवारी शिवकुमार, "मध्यप्रदेश के आदिवासी" पृ. क्र.192*
24. *v. Raghvaiyya, tribal of India page number 92*
25. *Tiwari DN ,"primitive tribes of India " government Madhya Pradesh, page number 72*
26. *वरे एस. एल., मध्य प्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति पृष्ठ क्रमांक 118*
27. *देवगांवकर एस. जी., problem of development of tribal areas]107*
28. *जैन एस. के., भारतीय समाज एवं संस्कृति पृष्ठ क्रमांक 112*
29. *दुबे, एस . सी., ट्राइबल हेरिटेज ऑफ इंडिया, पृ. क्र.११२*
30. *पालीवाल चंद्रमोहन, आदिवासी हरिजन आर्थिक विकास पृष्ठ क्रमांक 25*
31. *राष्ट्रीय वन स्वर, "वनवासी धर्म संस्कृति" अंक 3 वन साहित्य अकादमी के शोध पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 49*
32. *"वनस्वर९ "ईसाई आदिवासी नहीं" विशेषांक वन साहित्य अकादमी की शोध पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 27*
33. *श्रीवास्तव प्रदीप मुखर्जी, भवानी एम ,भारत का जनजातीय जीवन(मानव शास्त्र भाग 2) पृष्ठ क्रमांक 111*
34. *खरें मनोज, बघेल एल. एस., मध्य प्रदेश संदेश, संपादन– सूचना एवं प्रकाशन संचालनालय शाखा भोपाल पृष्ठ क्रमांक 112*
35. *Kumar] social Anthropology page number 50*
36. *Tiwari DN]"primitive tribes of India " government Madhya Pradesh] page number*
37. *हिस्लप, स्टीफेंस , "पेपर रिलेटेड टू द अबरिजनल ट्राइब्स ऑफ सेंट्रल प्रोविंस पेज नंबर 102*
38. *वनस्वर "वनवासी धर्म संस्कृति" अंक 3 वन साहित्य अकादमी के शोध पत्रिका पृष्ठ क्रमांक 80*